दर्शन एवं संस्कृति विभाग, संस्कृति विद्यापीठ
पी-एच. डी. कार्यक्रम हेतु
अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना (LOCF)

विभाग की कार्य-योजना (Action Plan of the Department)

दर्शन एवं संस्कृति विभाग; शास्त्रीय भारतीय व पश्चिमी दर्शन, भाषा-दर्शन, संस्कृति-दर्शन, तुलनात्मक दर्शन, सामाजिक-राजनीतिक दर्शन, तुलनात्मक धर्म, नैतिकता तथा तर्कशास्त्र की विभिन्न शाखाओं पर अभिकेंद्रित है। दर्शनशास्त्र आलोचनात्मक दृष्टि एवं विचार की एक व्यापक प्रक्रिया है, इसमें निरीक्षण और परीक्षण की अधिमान्यता, मान्यताओं का पुनर्मूल्यांकन तथा दार्शनिक प्रणालियों का तर्कणापूर्ण व्यवस्थितिकरण करना शामिल है। दर्शनशास्त्र, एक तर्कसंगत बौद्धिक सम्पदा का दस्तावेज़ होने के नाते, हमारी वैचारिकी को तीक्ष्ण करता है, हमारी समझ को समृद्ध करता है तथा हमारे बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करता है। दर्शनशास्त्र का अनुशासन वर्तमान शिक्षा में अपरिहार्य है, इसका अनुप्रयोज्य प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों में स्पष्ट है, यथा-राष्ट्रीय नीतिगत निर्णय, प्रबंधन, मीडिया, कानून, पारिस्थितिकी, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, संस्कृति आदि परम्परा से जो विरासत हमें प्राप्य है तथा हमारे जीवन को प्रभावित करती है; इनमें से कोई भी महत्त्वपूर्ण समाधान दार्शनिक नींव के बिना संभव नहीं हो सकता है।

विभाग का मुख्य उद्देश्य दार्शनिक चर्चा के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंच के रूप में कार्य करने के लिए विद्वानों के बीच सुसंगत विमर्श विकसित करना है। विभाग दार्शनिक और सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में बहुआयामी होने की आकांक्षा रखता है। विभाग का उद्देश्य शास्त्रीय भारतीय दार्शनिक ग्रंथों के गहन अध्ययन और उनकी पुनर्व्याख्या का है, जिससे दार्शनिक वैचारिकी को एक नई प्रेरणा और दिशा मिल सके।

दर्शन और संस्कृति विभाग, विश्वविद्यालय के नवोदित विभागों में से एक है। युवा मेधा में दार्शनिक समझ के साथ विभाग अनुसंधान (शोध) और स्नातकोत्तर में शिक्षण का कार्यक्रम प्रदान करता है। विभाग ऐसे सक्षम वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है जिसमें विद्यार्थी व शोधार्थी दर्शन एवं संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक समझ के साथ विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

इस कार्यक्रम के उद्देश्य हैं-शैक्षिक तथा गैर-शैक्षणिक संस्थानों, अनुसंधान एवं विकास संगठनों के आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अत्यधिक विश्लेषणात्मक और व्यापक दृष्टिकोण का विकास, विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश में विकसित दर्शन के बुनियादी सिद्धांतों की सांगोपांगी समझ, विशेषज्ञता के क्षेत्र का गंभीर ज्ञान, दार्शनिक विचारों के विकास की सामान्य जागरूकता, अनवरत सीखने तथा बहुविषयी-अन्तर्संबन्ध विकसन के साथ गुणवत्तापूर्ण और व्यवसायोन्मुख शैक्षिक वातावरण की निर्मिति हेतु संकल्पित है।

शीर्षक (Title)	कार्य-योजनाएँ (Action Plans)
शिक्षण Teaching	• उपाधि कार्यक्रम (Degree Programme) ❖ अनुसंधान कार्यक्रम (Ph. D. Programme) ❖ परास्नातक कार्यक्रम (PG Programme) ❖ स्नातक कार्यक्रम (UG Programme)
प्रशिक्षण Training	**'पद्धतिशास्त्र एवं शिक्षणविधि : दर्शनशास्त्र का अध्ययन एवं अध्यापन' विषय पर प्रतिवर्ष कार्यशाला के आयोजन की योजना**
शोध Research	**भाषा-दर्शन,** **समसामयिक चिंतन,** **सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन,** **मूल ग्रंथ आधारित शोध तथा** **नैतिकता केन्द्रित शोध**
ज्ञान-वितरण के माध्यम	• विभाग द्वारा प्रकाशन कार्यक्रम सुनिश्चित करना • शोध- पत्रिका का प्रकाशन • दार्शनिक परियोजना द्वारा समाज का अध्ययन • राष्ट्रीय संगोष्ठियों/ कार्यशाला का आयोजन
प्रकाशन-योजना	**भाषा-दर्शन से संबन्धित ग्रंथ**

पी-एच.डी. कार्यक्रम-विवरण हेतु ढाँचा

विभाग का नाम : दर्शन एवं संस्कृति

पाठ्यक्रम का नाम : पी-एच.डी. कार्यक्रम

पाठ्यक्रम कोड : PHDPHIL

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Programme Learning Outcomes

ज्ञान संबंधी	कौशल/दक्षता संबंधी	रोजगार संबंधी
दर्शनशास्त्र वर्तमान में सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण विषयों में से एक है। यह छात्रों को महान दार्शनिकों और उनके विचारों से परिचित कराएगा और यह भी कि कैसे उनके सिद्धांतों के माध्यम से समकालीन समस्याओं के बारे में चिंतन कर सकते हैं। यह पाठ्यचर्या भारतीय और पश्चिमी दर्शन को व्यापक आकार देगा। यह छात्रों को नैतिकतापूर्ण मान्यताओं को मुख्यधाराओं से भी अवगत कराएगा। छात्र कई अन्य मूल और वैकल्पिक पत्रों के माध्यम से विज्ञान, तर्कशास्त्र, विश्वधर्म-दर्शन, समकालीन चिन्तन, अध्यात्म, पर्यावरणीय नैतिकता तथा मूल-ग्रंथ के आलोक में दर्शनशास्त्र का पाठ कर सकते हैं।	पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य छात्र को विश्व से संबंधित मूलभूत दार्शनिक तथ्यों से अवगत कराना है, चाहे वह हमारे जीवन से हो, मन से हो, अस्तित्व से हो, विश्वास से हो, धर्म से हो या विज्ञान से संबंधित हो, दर्शनशास्त्र स्वरूप-विश्लेषण में व्यापक और गहन है। दर्शनशास्त्र के लिए यह पाठ्यचर्या विषयगत छात्रों की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और आकांक्षाओं के साथ-साथ एक विषय के रूप में दर्शनशास्त्र की आधुनिकतावादी प्रवृत्तियों और कार्यप्रणालियों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। पाठ्यचर्या सीखने के क्रम में ज्ञान, समझ, कौशल, दृष्टिकोण तथा मूल्य का विकसन अभीष्ट है।	दर्शनशास्त्र का उद्देश्य गंभीर, तार्किक और विश्लेषणात्मक रूप से सोचने की क्षमता को विकसित करना है और इसलिए व्यावहारिक स्थितियों में दार्शनिक तर्क (मेधा) का उपयोग करना है। दर्शनशास्त्र में उपाधि ग्रहण करने वाले छात्रों को मीडिया, शिक्षा, कानून, राजनीति, सरकार, सिविल सेवा आदि में रोजगार-निर्माण हेतु व्यापक मदद मिलेगी।

शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान (Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching) :

अभिगम	शिक्षण एक निरंतर प्रक्रिया है जो छात्रों के ज्ञान, शैक्षणिक जिज्ञासा, पढ़ने और अभ्यास, रचनात्मकता, सोचने की क्षमता और अपने ज्ञान के स्तर को बढ़ाने के लिए तथा लगातार सीखने के दृष्टिकोण से संपृक्त है। यह पाठ्यक्रम छात्रों के बीच बातचीत और उनकी स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता को विस्तार प्रदान हेतु संकल्पित है।
विधियाँ	छात्रों को कक्षाओं में प्रभावी प्रस्तुति, प्रश्नोत्तरी के साथ-साथ व्याख्यान के माध्यम से मौखिक और लिखित संचार कौशल विकसित किया जाएगा।
तकनीक	कक्षा में यह व्याख्यान, चार्ट, पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन और ऑडियो-विजुअल संसाधनों के उपयोग किया जाएगा। छात्र को कुछ विषयों पर चर्चा, समूह चर्चा और संगोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। जो भी उपयुक्त होगा, समस्या-समाधान का तरीका अपनाया जाएगा।
उपादान	दर्शनशास्त्र के शिक्षण का उद्देश्य कक्षा में ज्ञान के साथ-साथ जीवन में स्थानांतरण के माध्यम से छात्र को दर्शन, संस्कृति और समाज को समझने में दक्ष बनाना है।

मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):

क. सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					सत्रांत परीक्षा (75%)
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	

निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			**मौखिकी (20%)**
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	**20%**

पाठ्यक्रम संरचना (Programme Structure) :

सेमेस्टर	पाठ्यचर्या प्रकार	पाठ्यचर्या कोड	पाठ्यचर्या का नाम	क्रेडिट	संपर्क कक्षाएँ
प्रथम सेमेस्टर	मूल	PHDPHIL 101	आधारभूत शोध प्रविधि Fundamentals of Research Methodology	02	30
		PHDPHIL 102	शोध एवं प्रकाशन का नीतिशास्त्र RPE-Research & Publication Ethics	02	30
		PHDPHIL 103	दर्शनशास्त्र की शोध प्रविधि (Research Methodology of Philosophy	04	60
			कंप्यूटर परिचालन एवं अनुप्रयोग Computer Operation & Application	04	60
		PHDPHIL 105	दर्शनशास्त्र : अभिगम एवं पद्धतियाँ Philosophy: Approaches & Methods	04	60
द्वितीय सेमेस्टर से दसवें सेमेस्टर तक	मूल	शोध-प्रबंध लेखन		80	
		मौखिकी		20	
		अध्यापन एवं शोधकार्य में सहयोग		10 (अतिरिक्त)	
कुल क्रेडिट - 120, 10 क्रेडिट (अतिरिक्त)					

आधारभूत शोध प्रविधि (मूल) पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : आधारभूत शोध प्रविधि(मूल)

पाठ्यचर्या का कोड : PHDPHIL 101

क्रेडिट : 02

सेमेस्टर : I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	30
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	**30**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

यह पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को शोध संबंधी आधारभूत अवधारणाओं से परिचित कराती है। इसमें शोध के स्वरूप और उसके विविध प्रकारों का इस प्रकार से समावेश किया गया है कि शोधार्थी अपना शोधकार्य प्रारंभ करने से पहले उसके विविध पक्षों से परिचित हो सके। साथ ही इस पाठ्यचर्या में शोध के विविध प्रकारों तथा उनके बीच संबंध एवं भेद को भी स्थान दिया गया है, जिससे शोधार्थी इस संबंध में आवश्यक समझ विकसित करते हुए अपने शोधकार्य हेतु समुचित शोध प्रविधि का चयन कर सके।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes-CLOS):

प्रस्तुत पाठ्यचर्या के अध्ययन के उपरांत शोधार्थी 'शोध'(Research) की मूलभूत अवधारणाओं से परिचित हो सकेंगे और शोध के विविध प्रकारों की आवश्यक समझ विकसित कर सकेंगे।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course):

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे व्याख्यान	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **शोध की अवधारणा**	1. शोध की परिभाषा 2. शोध की विशेषताएँ 3. शोध के उद्देश्य 4. शोध के चरण 5. शोध और वैज्ञानिक विधि 6. शोधार्थी से अपेक्षाएँ 7. शोध प्रारूप 8. शोध रिपोर्ट का लेखन	**10**	**50**
मॉड्यूल-2 **शोध के प्रकार**	1. वर्णनात्मक बनाम विश्लेषणात्मक शोध 2. अनुप्रयुक्त बनाम आधारभूत शोध 3. मात्रात्मक बनाम गुणात्मक शोध 4. संकल्पनात्मक बनाम अनुभवमूलक शोध	**10**	**50**
योग		**20**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources) :

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	**आधार/पाठ्य ग्रंथ**	1. Depoy, Elizabeth& Laura N. Gitlin. (2015). *Introduction to Research: Understanding and Applying Multiple Strategies*. Mosby. 2. Pruzan,Peter. (2018). *Research Methodology: The Aims, Practices and Ethics of Science*. Springer.

2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Eco, Umberto. (2015). *How to Write a Thesis*. The MIT Press. 2. Chaddah, P. (2018). *Ethics in Competetive Research: Do not get scooped; do not get plagiarized*. Self Published. 3. Tarone,Elaine E., Gass,Susan M. & Cohen, Andrew D. (Ed.). (1994). *Research Methodology in Second-Language Acquisition*. Routledge. 4. Bonaccorsi, Andrea.(Ed.). (2018). *The Evaluation of Research in Social Sciences and Humanities: Lessons from the Italian Experience*. Springer. 5. Litosseliti,Lia . (2010). *Research Methods in Linguistics*. Bloomsbury Publishing India Private Limited.
3	ई-संसाधन	1. https://www.youtube.com/watch?v=lqk0JAljWEo 2. https://www.youtube.com/watch?v=IZLn9_PA_4s 3. https://www.youtube.com/watch?v=a4KewGac3bQ 4. https://www.youtube.com/watch?v=wXxXAKEQ9cw 5. https://www.youtube.com/watch?v=ET4c7hiRgbM 6. https://www.youtube.com/watch?v=a-XtVF7Bofg 7. https://www.youtube.com/watch?v=yplWZs3dqNQ 8. https://www.youtube.com/watch?v=zIYC6zG265E 9. https://www.youtube.com/watch?v=D94hTcQaEds
4	अन्य	शिक्षक द्वारा उपलब्ध करायी गयी सामग्री

शोध एवं प्रकाशन का नीतिशास्त्र (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: **शोध एवं प्रकाशन का नीतिशास्त्र (मूल)**

पाठ्यचर्या का कोड: **PHDPHIL 102**

क्रेडिट: **02**

सेमेस्टर: **I**

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	30
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	30

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

इस पाठ्यचर्या में शोध एवं प्रकाशन की नैतिकता से संबंधित मॉड्यूल हैं। इसके अंतर्गत नैतिकता, नैतिकता के दर्शन, नैतिक निर्णय एवं प्रतिक्रियाओं की प्रकृति को बताते हुए शोध की नैतिकता का बोध कराया जाएगा, शोध की नैतिकता से संबंधित संहिता और नीतियों का ज्ञान कराया जाएगा। इसके साथ ही वैज्ञानिक एवं शोध कदाचार व निरर्थक प्रकाशन करने से दूर रहने तथा शोध को नैतिक रूप से पूरा करने, उद्धरण नीतियों, डेटाबेस व शोध मेट्रिक्स का ज्ञान व बोध कराया जाएगा और उसका अनुप्रयोग सिखाया जाएगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes- CLOs):

1. शोध की नैतिकता का ज्ञान व बोध।
2. शोध की नैतिक संहिता एवं नीतियों का ज्ञान व बोध।
3. वैज्ञानिक एवं शोध कदाचार व उसके परिणामों का ज्ञान व बोध।
4. निरर्थक प्रकाशन का ज्ञान एवं बोध।
5. उद्धरण एवं संदर्भ शैली का ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग का कौशल।
6. डेटाबेस एवं शोध मेट्रिक्स का ज्ञान, बोध व अनुप्रयोग का कौशल।
7. कॉपीराइट का ज्ञान व बोध।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**शोध का नीतिशास्त्र** 1. नैतिकता एवं नीतिशास्त्र 2. परिभाषा, नैतिक दर्शन 3. नैतिक निर्णय और प्रतिक्रियाओं की प्रकृति 4. विज्ञान और शोध के संबंध में नैतिकता और इसका महत्व 5. बौद्धिक ईमानदारी और शोध की अखंडता	5	17
मॉड्यूल-2	**संहिता और नीतियाँ** 1. संहिता और नीति नियंता 2. अंतरराष्ट्रीय नैतिक संहिता	5	17
मॉड्यूल-3	**वैज्ञानिक एवं शोध कदाचार** 1. मिथ्याकरण, जालसाजी और साहित्यिक चोरी 2. छवि हेरफेर 3. शोध पुनरुत्पादकता	5	17

मॉड्यूल-4	**निरर्थक प्रकाशन** 1. डुप्लिकेट और अतिव्यापी प्रकाशन 2. सलामी स्लाइसिंग 3. चयनात्मक प्रतिवेदन एवं आँकड़ों का त्रुटिपूर्ण प्रस्तुतीकरण	5	16
मॉड्यूल-5	**कॉपीराइट और लाइसेंसिंग** 1. उद्धरण नीति 2. एक ही शोध अध्ययन को एकाधिक जगह प्रस्तुत करना	5	16
मॉड्यूल-6	**प्रकाशन का नीतिशास्त्र** 1. परिभाषा, परिचय और महत्व, प्रकाशन हेतु दिशा-निर्देश- COPE, WAME, आदि 2. डेटाबेस 3. इंडेक्सिंग एवं उद्धरण डेटाबेस Web of Science, Scopus, Directory of Open Access Journals, Ei Compendex, Google Scholar, etc. 4. इंपैक्ट फैक्टर : Journal Citation Report, SNIP, SJR, IPP, Cite Score 5. मेट्रिक्स: h-index, g-index, i10 index, altmetrics	5	17
योग		30	100

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources) :

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	**आधार/पाठ्य ग्रंथ**	1. MacIntyre, Alasdair. (1967). *A short History of Ethics*. London. 2. Chaddah, P. (2018). *Ethics in Competetive Research: Do not get scooped; do not get plagiarized*. Self Published.
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Bird, A. (2006). *Philosophy of Science*. Routeledge.
3	**ई-संसाधन**	1. Beall, J. (2012). Predatory publishers are corrupting open access. Nature, 489(7415), 179-179. https://doi.org/10.1038/489179a 2. Indian National Science Academy (INSA), Ethics in Science Education, Research and Governanace (2019), ISBN: 978-81-939482-1-7. http://www.insaindia.res.in/pdf/Ethics_Book.pdf 3. https://www.youtube.com/watch?v=2VVe60z4G5c
4	अन्य	शिक्षक द्वारा उपलब्ध करायी गयी सामग्री

दर्शनशास्त्र की शोध प्रविधि(मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: दर्शनशास्त्र की शोध प्रविधि (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: PHDPHIL 103

क्रेडिट: 04

सेमेस्टर: I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	**60**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

एक ही वस्तु को बार-बार देखते रहने या एक ही कालावधि में अनेक वस्तुओं का साक्षात्कार करते रहने पर किसी व्यक्ति का सम्बद्ध ज्ञेय पदार्थों के सम्बन्ध में अपनी शक्ति, रुचि परिवेश आदि की सहायता या प्रेरणा से जो एक विशेष दृष्टिकोण बनता या विकसित होता चला जाता है, वह उस व्यक्ति का 'दर्शन' कहा जा सकता है। जब यही बात एक समुदाय या वर्ग करता है तो इसे उस समुदाय या वर्ग का 'दर्शन' कहते हैं। वैसे दर्शन शब्द का एक बहुत ही सीधा सादा अर्थ है, और वह है-देखने की प्रक्रिया, विधि या नजरिया। जैसे विभिन्न व्यक्तियों की रुचियों, आवश्यकताओं और शक्तियों आदि में अन्तर होता है, उसी प्रकार विभिन्न व्यक्तियों के देखने की विधियों में भी अन्तर होता है। इसके अतिरिक्त सभी दृष्टिकोण इतने ऊँचे स्तर पर नहीं विकसित हो पाते कि वे अपना स्थायी चिह्न छोड़ सकें या बाद के लोग उन्हें याद रखें। स्थायित्व प्राप्ति के लिये सम्बद्ध दृष्टिकोण में अधिक से अधिक लोगों को प्रभावित करने की शक्ति होनी चाहिये। इसीलिये संसार में उत्पन्न असंख्य लोगों के असंख्य मतों की तुलना में 'दर्शन' के नाम से अभिहित संकल्पनाओं की संख्या इनी-गिनी ही है। तात्पर्य यह हुआ कि दर्शन का सामान्य अर्थ भले ही 'देखने की विधि' है, पर पारिभाषिक रूप में दर्शन शब्द से हम चिन्तन के उन मान्य व मानक रूपों का ही ग्रहण करते हैं, जिनकी सहायता से हम जीवन और जगत के सम्बन्ध में समुचित ज्ञान प्राप्त कर सकें।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes- CLOs):

संसार में अधिकतर बातों या वस्तुओं की उपयोगिता का प्रश्न संबद्ध देश, काल, पात्र आदि की स्थिति के साथ जुड़ा रहता है। भारतीय दर्शन गहरे चिन्तन-मनन के परिणाम हैं। दर्शनों के अतिरिक्त भारतीय ज्ञान की अन्य शाखाएँ भी अधिकतर हमारे पूर्वजों की सतत् तपस्या का ही परिणाम है और न्यायदर्शन भी इसका अपवाद नहीं है। हाँ, इतना अवश्य है कि इस शास्त्र के विकास के विभिन्न चरणों में इसकी उपयोगिता में नये आयाम जुड़ते रहे। अत: अन्य दर्शनों की तुलना में न्याय की उपयोगिता का प्रश्न कुछ विभिन्नता रखता है।

चार्वाक के अतिरिक्त सभी भारतीय दर्शनों में किसी-न-किसी रूप में मुक्ति को ही मानव जीवन का चरम लक्ष्य बताया गया है और यही बात गौतम ने भी न्यायसूत्र में स्पष्टतया प्रतिपादित की है। अतः परम्परीण भारतीय दृष्टिकोण से तो निःश्रेयस् की प्राप्ति ही न्याय के पठन-पाठन का उद्देश्य है। क्योंकि ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती, और किसी भी तथ्य का समग्र ज्ञान न्याय की प्रक्रिया को अपनाये बिना नहीं हो सकता। न्याय को अन्य शास्त्रों का दीपक भी बताया गया है क्योंकि उनके रहस्यों का पता लगाने के लिए और संभावित प्रतिफलों में से सर्वाधिक समर्थ का निश्चय करने के लिए भी बौद्धिक ऊहापोह की आवश्यकता पड़ती है। कौन सा पक्ष, मत या तथ्य अधिक संगत है, इसका निर्णय न्याय की प्रक्रिया से ही अधिकतर संभव होता है। जो लोग श्रद्धा या विश्वास या आप्तवचनों के आधार पर चलते हैं, उनके लिए तर्क भले ही अधिक उपयोगी न हो, पर जीवन व जगत के अधिकतर क्रियाकलापों का आधार तो कर्ता का विवेक ही है और विवेक का सबसे बड़ा विश्लेषक न्यायशास्त्र है। यद्यपि यह भी एक तथ्य है कि संसार की जनसंख्या के बहुत बड़े वर्ग को अपनी जीवनयात्रा में न्याय जैसे बौद्धिक शास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। किन्तु यह बात तो बहुत कुछ अन्य शास्त्रों के बारे में भी कही जा सकती है। बिजली का उपयोग असंख्य लोग करते हैं, पर उससे सम्बद्ध विज्ञान के विधिवत् अध्ययन के उपयोग के प्रति जो लोग सचेत हैं उनकी संख्या तो नगण्य ही है।

संसार में प्रत्येक जाति या समाज की अपनी मान्यताएं होती हैं। मान्यताओं का आधार वैज्ञानिक भी हो सकता है और विश्वासपरक भी। आधार कुछ भी हो, समय परिवर्तन के साथ-साथ उस जाति के अन्दर से या बाहर से कई लोग उन मान्यताओं पर प्रहार करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में जो लोग उन मान्यताओं को ठीक समझते हैं, वे उनके संरक्षण के लिए प्रयत्न करते हैं। यह काम जब बौद्धिक स्तर पर होता है तो शास्त्रीय विवाद का रूप धारण कर लेता है। और वाद-विवाद की पद्धति भी अपने आप में एक शास्त्र बन जाती है। भारत में वेदों का सर्वाधिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व रहा है। किन्तु भारतभूमि में ही चार्वाकों आदि ने उनकी निन्दा आरम्भ कर दी तो वैदिक लोगों के लिए भी यह आवश्यक हो गया कि वे वेदों की महत्ता के पक्ष में बौद्धिक स्तर पर भी कुछ करें। उद्योतकर ने न्यायवार्तिक में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है कि उन्होंने अपने ग्रन्थ की रचना बौद्धों के कुतर्कों का खण्डन करने के लिए की है। बौद्ध न्याय का आविर्भाव भी वैदिक न्याय की प्रतिक्रिया के रूप में ही हुआ। सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त आदि सभी दर्शनों में न्यायपरक समस्याओं के विश्लेषण से भी यह सिद्ध होता है कि सभी शास्त्रों को अपनी परम्परा का समर्थन व विपक्ष का खण्डन करने के लिए न्यायशास्त्र की आवश्यकता पड़ती रही।

नव्यन्याय के आचार्यों के समय इस शास्त्र ने एक नया मोड़ लिया। जिस आचार्य ने भाषा को अधिक दुरूह करते हुए उसको अधिक लच्छेदार बनाया, उसका समसामयिक आचार्यों ने अधिक सम्मान किया। गंगेश, रघुनाथ शिरोमणि और जगदीश तर्कालंकार के ग्रन्थों में यह प्रवृत्ति अपनी चरम सीमा पर पहुंची। इस प्रवृत्ति से न्याय की विषयवस्तु का तो कोई विशेष विकास नहीं हुआ; पर भाषा में जो बारीकी आई, उसका अनुकरण साहित्य जैसे क्षेत्र में भी किया गया। न्याय का आधार संशय है । वात्स्यायन ने स्पष्ट कहा है कि यदि कोई विषय निर्णीत है या अस्तित्व में ही नहीं है तो न्याय की आवश्यकता नहीं पड़ती। जहाँ कहीं किसी वस्तु, बात या समस्या का अस्तित्व हो पर उसका निर्णय न हो रहा हो, वहीं न्याय की सहायता अपेक्षित होती है । स्पष्ट है कि ऐसे अवसर आम लोगों के जीवन से लेकर महान् शास्त्रों के विश्लेषण तक सभी जगह उपस्थित होते हैं । अतः न्यायशास्त्र न केवल शास्त्रीय दृष्टि से अपितु व्यावहारिक जीवन-यापन के लिये भी अत्यधिक उपयोगी है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल 1	**भारतीय शास्त्रीयपरंपरा ग्रंथ रचना की प्रविधि** 1. उद्देश 2. लक्षण 3. परीक्षा 4. तंत्रयुक्तियों का महत्त्व 5. व्याख्या के नियम	15	25
मॉड्यूल 2	**ज्ञान के लिए तर्कों तथा युक्तियों का निर्माण** 1. उपनिषदीय संवाद की पद्धति, 2. श्रवण की विधि 3. मनन की विधि 4. निधिध्यासन 5. समग्र दृष्टिकोण 6. वाद 7. जल्प 8. वितंडा 9. प्रतिभा 10. युक्ति 11. प्रसंग 12. नय 13. प्रमाण 14. निगमनात्मक और आगमनात्मक तर्क 15. सादृश्यता व इसके प्रकार	15	25
मॉड्यूल 3	**पाश्चात्य दर्शन में दार्शनिक-प्रविधि** 1. द्वंद्वात्मक विधि 2. अंतर्ज्ञान की विधि 3. संदेह की विधि 4. विश्लेषण की विधि 5. अपचयन विधि 6. संरचनावाद की विधि 7. हेर्मेनेयुटिक्स और डीकंस्ट्रक्टिविज्म	15	25

मॉड्यूल 4	**शोध लेखन में अनुप्रयुक्त अनुसंधानयोग्यता और तकनीकें:** 1. शोध के चरण- विषय का चयन, विषय के प्रकार 2. अनुसंधान परियोजना का निष्पादन 3. अनुसंधान नैतिकता 4. देवनागरी लिपि से रोमन लिपि में लिप्यंतरण 5. संदर्भ देने के तरीके 6. उद्धरण 7. ग्रंथ-सूची की तकनीकी	15	25
योग		60	100%

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources) :

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	**आधार/पाठ्य ग्रंथ**	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Keshav Mishra, Tarkabhā ed. by Badrinath Shukla (Motilal Banarasidas) 2. B.K. Matilal,Logic, Language and Reality (Motilal Banarasidas-1985) 3. S.C. Vidyabhusana, History of Indian Logic, Motilal Banarasidas, Delhi, 1988. 4. W.K. Lele, The Doctrines of Tantryukti (Chaukhamba Surabharati Prakashana, Varanasi-1981. 5. T.P.Ramachandran, The Methodology of Research in Philosophy, Radhakrishnan , Institute for Advanced Study in Philosophy, University of Madras, 1984. 6. Hans-George Gadmer, Truth and Method (London- 1989). 7. George, F. Mclean, Tradition and Contemporary Life, University of Madras, 1986. 8. Rorty, R, (ed.), The Linguistic Turn (University of Chicago- 1967). 9. Sunder Rajan, Studies in Phenomenology:Hermeneutics and Deconstruction (ICPR, New Delhi-1991). 10. Dr. Chhaya Rai, Studies in Philosophical Methods, University of Jabalpur, 1980.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	शिक्षक द्वारा उपलब्ध करायी गयी सामग्री

कंप्यूटर परिचालन एवं अनुप्रयोग
(मूल)पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	41
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	19
कौशल विकास गतिविधियाँ	0
कुल क्रेडिट घंटे	**60**

पाठ्यचर्या का नाम: **कंप्यूटर परिचालन एवं अनुप्रयोग (मूल)**

पाठ्यचर्या का कोड: PC-COA-104

क्रेडिट: **04**

सेमेस्टर: **I**

विस्तृत जानकारी के लिए लीला (LILA) के वेबपेज पर जाएँ :http://www.mgahv.in/pdf/LILA/phd_syllabus_2021.pdf

अभिगम एवं पद्धतियाँ (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: दर्शनशास्त्र : अभिगम एवं पद्धतियाँ (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: PHDPHIL 105

क्रेडिट: 04

सेमेस्टर: I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	**60**
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण(Description of Course):

एक ही पदार्थ मनुष्य को भिन्न परिस्थितियों में भिन्न प्रतीत होता है। चलती गाड़ी से अगल-बगल के घर, पेड़, पहाड़ चलते नजर आते हैं। पानी में सीधी लकड़ी टेढ़ी दीखती है। इस प्रकार के अनुभवों की कमी मनुष्य के जीवन में नहीं है। इनसे चिन्तनशील मनुष्य के सामने एक समस्या उपस्थित हो जाती है। कौन वास्तविक है- चलते घर, पेड़, पहाड़ या उनका स्थिर रूप; गतिशील चन्द्रमा या उसका स्थिर रूप; पानी में टेढ़ी लकड़ी या उसका सीधा रूप ? इसका उत्तर सरल प्रतीत होता है। शायद आप कहेंगे-लकड़ी सीधी रहती है, पर पानी में टेढ़ी दीखती है। पर इससे समस्या का समाधान नहीं होता है। लकड़ी ऐसी क्यों प्रतीत होती है और क्यों उसे उसका अवास्तविक (Unreal) रूप कहा जाता है ? इसी से तत्त्व (Reality) और आभास (Appearance) की समस्या उपस्थित होती है। संसार में विभिन्न प्रकार के जड़ पदार्थ हैं; जैसे, घर, टेबुल, कुर्सी इत्यादि। यूं तो एक-दूसरे से भिन्न हैं पर प्रत्येक जड़ द्रव्य के ही बने हुए होते हैं। विशिष्ट पदार्थों में परिवर्तन हो जाता है, पर वह जड़ द्रव्य जिससे वे बनते हैं, बदलता नहीं। जड़ पदार्थों के अतिरिक्त मनुष्य को अपने विचारों का या जीव का भी अनुभव होता है। ये जड़ पदार्थ से भिन्न माने जाते हैं। जिस प्रकार विश्व के सभी जड़ पदार्थ जड़ द्रव्य के ही व्यक्त रूप हैं, क्या उसी प्रकार यह सम्भव नहीं है कि कोई ऐसा मूल तत्त्व हो, जिससे सम्पूर्ण विश्व के अनुभूत पदार्थ उत्पन्न हुए हों ? यह समस्या मूल तत्त्व (Ultimate Reality) की ओर संकेत करती है। दूसरे शब्दों में, समस्या यह है कि मूल तत्त्व (Ultimate Reality) क्या है-जड़ (Matter) या चेतन (Spirit) या दोनों अथवा कोई नहीं ? मूल तत्त्व (Ultimate Reality) की संख्या (Number) क्या है? वे कितने प्रकार (Kinds) के हैं ? इन प्रश्नों के भिन्न-भिन्न उत्तर दिये गये हैं। दर्शन के आरम्भ-काल से ही इन प्रश्नों पर चिन्तन हो रहा है।

समस्या (तत्त्व) के विषय में दो मुख्य समस्याएँ हैं- (i) मूल तत्त्व की संख्या क्या है ? विश्व एक ही तत्त्व से बना अथवा अनेक तत्त्वों से? संसार की अनेकता सत्य है अर्थात् अनेक पदार्थ वास्तव में भिन्न हैं या उनमें एकता है या वे सब दो प्रकार हैं ? सभी प्रश्न एक ही समस्या करते हैं कि मूल तत्त्व की संख्या कितनी है। किस तरह है या दो से को इंगित (ii) मूल तत्त्व की प्रकृति या स्वरूप (Nature) क्या है अर्थात् वह चेतन या दोनों या तटस्थ? पहले प्रश्न से सम्बन्धित एक दूसरी समस्या है कि मूल तत्त्व कितने प्रकार का है। मूल तत्त्व एक ही प्रकार के होते हुए भी अनेक हो सकते हैं। उदाहरणार्थ, एक आलमारी में एक ही प्रकार की पुस्तकें रह सकती हैं, पर अनेक संख्या में इसलिए एक ही मत एकवादी (Monistic) और अनेकवादी (Pluralistic) दोनों हो सकता है। मूल तत्त्व का स्वरूप एक मानने से यह एकवाद और संख्या में उसे अनेक मानने से अनेकवाद कहलायगा। इसी प्रकार अनेक मूल तत्त्व होने से भी उनका स्वरूप एक या दो माना जा सकता है कुछ दार्शनिकों ने इन दोनों समस्याओं के भेद को स्पष्ट करने के लिए संख्यासम्बन्धी एकवाद को एकत्ववाद (Singularism) और स्वरूप-सम्बन्धी एकवाद को एकतत्त्ववाद (Monism) कहा है पर सरलता के लिए दोनों को एकवाद (Monism) ही कह सकते हैं।

अपेक्षित अधिगम परिणाम CLOs(Course Learning Outcomes):

दर्शन की परिभाषा देना उतना ही कठिन है जितना जीवन की परिभाषा देना। यद्यपि हम जीवन की परिभाषा बतलाने में असमर्थ हैं तथापि यह तो हम कह ही सकते हैं कि जीवन में क्या-क्या होता है और उत्तम जीवन की क्या कल्पना है। ठीक इसी प्रकार यदि हम न कह सकें कि दर्शन क्या है, तो भी हम यह बतला सकते हैं कि अनादि काल से मनुष्य के अन्तस् में उत्पन्न होने वाले किन प्रश्नों के सही उत्तर की खोज यह शास्त्र में करता आया है? मनुष्य का वास्तविक स्वरूप क्या है? विश्व में उसकी स्थिति क्या है? विश्व के सृजन तथा संहार के पीछे कौन-सी शक्ति अपने ऐश्वर्य का परिचय दे रही है? किस सत्ता से प्रेरित होकर समस्त विश्व नियमानुसार स्वकार्य में रत हैं? क्यों प्रकृति अपने नियमों का उल्लंघन कभी नहीं करती है? इस वसुंधरा के प्राणियों में क्यों सुख है, क्यों दुःख है तथा इनके सुख-दुःखों में इतनी विषमता क्यों है? क्या दुःख की इस स्थिति एवं विषमता को पार करने का कोई उपाय भी है? क्या पाप है? क्या पुण्य है? उत्तम समाज की कौन-सी ऐसी व्यवस्था हो सकती है जो मनुष्य के लिए अत्यधिक श्रेयस्कर हो? मनुष्य के वास्तविक कल्याण का क्या साधन है? ये सब ऐसे प्रश्न है जिनके उत्तर को मानवता अनादि काल से प्रत्येक देश में किसी-न-किसी प्रकार से खोजती आई है और इस अन्वेषण के फलस्वरूप जिस साहित्य की रचना हुई है उसे दर्शनशास्त्र कहा जाता है। इस साधारण परिचय के आधार पर हम 'दर्शन' की परिभाषा यों दे सकते हैं-मनुष्य का दर्शन वह बौद्धिक प्रयास है जो उसे सत्ता-सम्बन्धी ज्ञान देता है और उसका परम कल्याण करता है।

तत्त्वज्ञान की अभिलाषा केवल भारतीयों की ही विशेषता नहीं है, यह पाश्चात्य देशों के निवासियों की भी विशेषता रही है। लेकिन भारतीय दर्शन की एक विशेषता है जो निरपवाद रूप से उसके सभी विचारकों को मान्य है। और वह है दर्शन का जीवन से अनिवार्य सम्बन्ध। प्रमुख यूनानी दार्शनिकों की परिभाषा के अनुसार 'ज्ञान के प्रति प्रेम' को ही 'दर्शन' कहते हैं। अनुसार 'दर्शन' मनुष्य के मन में उत्पन्न होने वाले विश्व-संबंधी अनेक कौतूहलों की शांति का एक साधन है। कुछ लोग 'दर्शन' शब्द से उस शास्त्र की कल्पना करते हैं जिसमें विज्ञान के सिद्धान्तों के आधारभूत सिद्धान्तों की विवेचना की जाती है। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी ये सभी परिभाषायें इस अंश में दोषपूर्ण प्रतीत होती हैं कि वे जीवन और दर्शन के अविनाभाव पर कोई जोर नहीं देती। भारतीय दार्शनिकों के अनुसार मनुष्य के निःश्रेयस की प्राप्ति में दर्शन की अनिवार्य उपयोगिता है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of theCourse)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल 1	**भारतीय दर्शन और धर्म** 1. वेद (संहिता, ब्राह्मण और उपनिषद्) 2. आस्तिक दर्शनों की प्रणालियाँ 3. जैन धर्म-दर्शन की पद्धति 4. बौद्ध धर्म-दर्शन की पद्धति 5. समकालीन दर्शन की दार्शनिक प्रवृतियाँ	**15**	**25**
मॉड्यूल 2	**पश्चिमी दर्शन** 1. यूनानी दर्शन की दार्शनिक प्रवृतियाँ 2. मध्ययुगीन दर्शन की दार्शनिक प्रवृतियाँ 3. आधुनिक दर्शन की दार्शनिक प्रवृतियाँ 4. समकालीन दर्शन की दार्शनिक प्रवृतियाँ	**15**	**25**
मॉड्यूल 3	**दर्शनशास्त्र की प्रमुख संकाय** 1. धर्म-दर्शन 2. सामाजिक-राजनीतिक दर्शन 3. नैतिक दर्शन 4. तुलनात्मक धर्म- दर्शन 5. भाषा-दर्शन 6. तर्कशास्त्र 7. विज्ञान का दर्शन 8. सौंदर्यशास्त्र	**15**	**25**
मॉड्यूल 4	**अभारतीय मूल के धर्म** 1. यहूदी धर्म 2. ईसाई धर्म 3. इस्लाम धर्म 4. पारसी धर्म 5. ताओवाद 6. कन्फ्यूशीवाद	**15**	**25**
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण (APA प्रारूप में)
1	**आधार/पाठ्य ग्रंथ**	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Madhavacarya, *Sarva-Darshan-Sangrah*, (Tr. E.B. Cowell & A.E. Gough, ed. K.L. Joshi (Parimal Publications; Delhi-1997.

		2. Dasgupta, S.N. : *History of Indian Philosophy*, Vol. I to V. (Cambridge: at the University Press 1961). 3. Kane, P.V., *History of Dharmshastra,* Vol. I to V (Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, 1930 to 1962). 4. Avasthi, Bachchu Lal, *Bharatiya Darshaana Brihat Kosh,* Vol. I to IV (Sarda Publishing House, Delhi, 2004). 5. Nakamura, H. *Indian Buddhism*, (Motilal Banarasidas, Delhi, 1987). 6. Mehta, Mohan Lal, *Jaina-Dharma Darsana* (Setha Mutha Chagana Lal Memorial Foundation, Bangalore, 1999). 7. Russel, B. *History of Western Philosophy*, (London: George Allen & Unwin LTD 5th imp., 1969). 8. Passmore, J., *Hundred years of Philosophy* (duchworth & Co. LTD, London IIIrd IMP, 1962) 9. Honderich, Ted., (ed.) *The Oxford Companion to Philosophy*, Oxford University Press: New York, 1995). 10. Copleston, F., *A History of Philosophy*, Vol. I to XI, (London, Yew York. New Edition, 2003) 11. Eliade, M., (ed.) *The Encyclopedia of Religion* (Macmillan Publishing Company, New York 1987). 12. Damodarana, K., *Bharatiya Chintana Prampara* (Tr.G. Shridharan) (Progress Publishing House, New Delhi-2001). 13. J. Charles King & James A., Mcgilvray, *Political and Social Philosophy* (Mcgraw Hill Book Company New York-1973). 14. S. Radhakrishanan, *Eastern Religions and Western Thought* (Oxford University Press, Delhi, London, New York-1939). 15. John, R., Burr & Milton Goldingel, *Philosophy and Contemporary issues* (Prentice-Hall of India, New Delhi-2008). 16. Rorty, R. (ed.), *The Linguistic Turn* (University of Chicago-1967). 17. Morris, W., *Problems in Aesthetics* (The Mcmillan Company, London, 1918). 18. Capra, F., *The Turning Point* (Fontana paper books-1982). 19. Singer, P., *Practical Ethics* (Cambridge University Press-1993). 20. Chadwick, R. (ed.), *Encyclopedia of Applied Ethics* (Academic Press-1998). 21. Mishra, Nityanand, *Nitisastr*a (Motilal Banarasidas, Delhi-2005). 22. Russell, B., *New hopes for changing world* (Georg-Allen& Unwin Ltd. London-1951). 23. Derrida J., Of Grammatology (Motilal Banarasidas, Delhi-1994). 24. Hardayal, L., Twelve Religions and Modern Life, (Kalyani Publisher, Ludhiana, New Delhi-1983)
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	शिक्षक द्वारा उपलब्ध करायी गयी सामग्री

(विभागाध्यक्ष)